



दारुल उलूम का देवबन्द क्षेत्र पर आर्थिक प्रभाव (एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन)

Vaseem Chaudhary

S.R.F, J.R.F (UGC NET) VPO Khandrawali, Dist. Shamli, Uttar Pradesh.

ABSTRACT

दारुल उलूम पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सहारनपुर जनपद के देवबन्द नगर में स्थित एक शिक्षण संस्थान है। यह इस्लामिक शिक्षा के क्षेत्र में विश्व की एक महानतम शिक्षण संस्था है। दारुल उलूम न केवल भारतीय अपितु सम्पूर्ण विश्व के मुस्लिमों को धार्मिक शिक्षा प्रदान करता रहा है। दारुल उलूम ने सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से न केवल देवबन्द क्षेत्र को, बल्कि समूचे दक्षिण एशियाई परिक्षेत्र को प्रभावित किया है। वहीं इसका एक महत्वपूर्ण प्रभाव आर्थिक रूप में भी देवबन्द क्षेत्र पर रहा है।

KEYWORDS: दारुल उलूम, बाजार, आर्थिक, कुटीर उद्योगों, रोजगार

INTRODUCTION

दारुल उलूम देवबन्द की स्थापना से पूर्व देवबन्द उत्तरी भारत में गंगा-यमुना के मैदान में स्थित एक छोटे स्तर का कस्बा था। दारुल उलूम जैसे महत्वपूर्ण और विशाल संस्थान की स्थापना एवं संस्थान की निरन्तर सर्वाङ्गीर्य होने के चलते जैसे-जैसे संस्थान के आकार, महत्व, मान्यता एवं गुणवत्ता में विकास होता गया। वैसे-वैसे क्रमिक रूप से इसने देवबन्द को भी एक ऐतिहासिक गरिमा, सांस्कृतिक आभा एवं आर्थिक विकास से सम्बन्धित अत्यधिक संवृद्धि प्रदान की। दारुल उलूम देवबन्द ने क्षेत्र को यह आर्थिक संवृद्धि, मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही रूपों में प्रदान की है। वस्तुतः दारुल उलूम की स्थापना ने देवबन्द को सम्पूर्ण विश्व में एक ऐतिहासिक पहचान प्रदान की। वहीं दूसरे इसने इस क्षेत्र को सुसंस्कृत एवं समृद्ध करने में महती भूमिका का भी निर्वहन किया। इस संस्थान ने देवबन्द में कई प्रत्यक्ष आर्थिक तथा कई आर्थिकेतर प्रक्रियाओं को आरम्भ किया। जिन्होंने सम्मिलित प्रभाव के रूप में इस को आर्थिक रूप से व्यापक मात्रा में समृद्ध किया। दारुल उलूम देवबन्द ने असंख्य व्यक्तियों को धार्मिक व भौक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु देवबन्द में आकर्षित किया। जिनमें छात्र शिक्षक शिक्षणोत्तर, रखरखाव, निर्माण के कार्यों हेतु व्यक्ति शामिल हैं। आवासीय भौक्षिक मदरसा (संस्थान) होने के कारण तथा छात्रों को शिक्षा प्रदान करने हेतु अध्यापकों के रूप में छात्रों की भोजन व अन्य आवश्यकताओं के लिए उनसे सम्बन्धित सेवाओं से जुड़े व्यक्तियों का प्रत्यक्ष सेवायोजन करते हुए उनको प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त वहीं इस संस्थान ने उससे कई गुणा अधिक अप्रत्यक्ष रोजगारों की एक श्रृंखला जैसे होटल उद्योग, जलपान गृह, स्थानीय यातायात परिवहन के साधन, आवास-निवास की आवश्यकता, धन विनियम, सेवायें की दुकानें, दूरसंचार सेवायें उपलब्ध कराने वाली दुकानें, पुस्तकों, प्रकाशन संस्थान एवं पुस्तक विक्रेताओं को भी आकर्षित किया।

देवबन्द में दारुल उलूम की अवस्थिति होने के कारण कई अन्य बड़े पैमाने के व्यापार एवं उद्योगों के स्थापित होने तथा उनके निरन्तर अस्तित्व में रहने के लिए आवश्यक मांग को भी निर्मित किया है। देवबन्द क्षेत्र के बाजार की उपभोक्ताओं की उपस्थिति का एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया है। दारुल उलूम के कारण मुख्य संस्थान में लगभग छह हजार छात्रों की उपस्थिति और इसके चर्तुदिक स्थित मदरसों में भी लगभग चार हजार छात्रों की उपस्थिति होने से देवबन्द के बाजार में उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ी। जिससे दारुल उलूम देवबन्द क्षेत्र के बाजार के आकार को वृद्धि देने में सहायक हुआ।

इसके साथ ही इसने मुख्य बाजार के अतिरिक्त असंख्य कुटीर उद्योगों के उत्पादों की मांग को भी उत्पन्न किया। जिससे कुटीर उद्योग क्षेत्र में अन्य कई रोजगार निर्मित हुए। दरअसल दारुल उलूम ने ही देवबन्द में असंख्य व्यक्तियों का आना सुनिश्चित किया। इसके चलते यहाँ न केवल मानव की मूल आवश्यकताओं से सम्बन्धित उपभोक्ता वस्तुओं का बाजार (अनाज, दूध, फल, सब्जी, दालें, एवं मसालों) की मांग में पूर्व की तुलना में नवीन मांग को सृजित किया। दारुल उलूम देवबन्द की स्थापना उपरान्त देवबन्द एक धार्मिक, भौक्षिक स्थल के रूप में विकसित होता गया। जिससे यहाँ मस्जिद एवं मदरसों के निर्माण की परम्परा का विकास होता रहा। इसके अतिरिक्त दारुल उलूम देवबन्द में भी अपनी स्थापना से निरन्तर, वृद्धि होने से आवश्यक निर्माण या मरम्मत कार्य की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। इससे यहाँ इंजीनियरिंग सेवाओं, मिस्त्री, श्रमिक तथा भवन सामग्री सम्बन्धित अन्य वस्तुएं की अमूल्यपूर्ण मांग उत्पन्न हुई। भवनों के निर्माण प्रक्रिया के द्वितीय चरण में लगने वाले विद्युत सम्बन्धी उपकरणों की प्रत्यक्ष मांग को उत्पन्न किया। साथ ही इन विभिन्न कार्यों में कुशल मिस्त्री तथा अकुशल श्रमिकों की विशाल संख्या में आवश्यकता हुई। जिसके कारण इस क्षेत्र में निर्धन व्यक्तियों को रोजगार की प्राप्ति हुई। दारुल उलूम देवबन्द इस्लामिक जगत के शिक्षण संस्थानों में एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त शिक्षण संस्थान के रूप में विकसित हो गया है। इसके कारण ही देवबन्द नगर के बाजार में अन्य उपनगरों की तुलना में मुस्लिम धार्मिक साहित्य तथा अरबी, फारसी व उर्दू भाषा की क्लासिक्स तथा आम पुस्तकों का बाजार भी विकसित हो गया है। इस्लामिक साहित्य के प्रकाशक एवं विक्रेता तथा दारुल उलूम देवबन्द सहित इन विभिन्न मदरसों में शिक्षण प्रक्रिया हेतु आवश्यक कई अन्य रेशनरी सामान जैसे नोटबुक, पेन, पेंसिल इत्यादि का एक नवीन रोजगार अपने कई अन्य सहायक रोजगार सहित जैसे फोटोकॉपी, टाइपिंग की दुकानें, धन हस्तान्तरण सेवाओं की दुकानें, भाषा अनुवाद एवं उर्दू-अरबी सिखाने के कोचिंग सेंटर आदि सेवाओं से सम्बन्धित दुकानें विकसित होती चली गयी। दारुल उलूम के कारण ही देवबन्द, उत्तरी भारत में, दिल्ली के लगभग समान उर्दू, अरबी एवं फारसी

पब्लिकेशनों के चलते पुस्तक निर्माण से सम्बन्धित अन्य कार्य प्रिंटिंग, कम्पोजिंग, बाइंडिंग के एक बड़े महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित होता चला गया है।

यहाँ छात्रों, जायरीनों एवं उनके अभिभावकों और रोजगार खोजने वाले श्रमिकों की निरन्तर उपस्थिति देवबन्द दारुल उलूम के कारण बनी रहती है। जिसके चलते न केवल आवास-निवास सेवा प्रदाता संस्थानों की आवश्यकता भी निरन्तर बनी रहती है। जिससे देवबन्द तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में हजारों भवन निर्माण की एक प्रक्रिया आरम्भ हो गयी और अभी भी निरन्तर रूप से बनी हुई है। जिससे बड़ी मात्रा में होटल, जलपान गृह, व यात्री विश्राम गृह आदि को विकसित करने में संयुक्त रूप से योगदान किया है। इसने स्थानीय यातायात परक रोजगारों जैसे ऑटो, बैटरी, रिक्शा, बाइक राइड, कैब एवं साइकिल रिक्शा के रूप में समाज के हाशिये पर रह रहे निर्धनतम वर्ग को असंख्य रोजगार प्रदान किये हैं।

हमने अपने सर्वेक्षणात्मक अध्ययन में पाया कि सैकड़ों व्यक्ति देवबन्द में जिल्दसाजी से रोजगार पा रहे हैं। दारुल उलूम देवबन्द में अध्ययनरत हजारों छात्रों द्वारा पुस्तकों का उपयोग करने तथा स्वयं दारुल उलूम के पुस्तकालय में विशाल संख्या में संग्रहित पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए पुस्तकों की जिल्दसाजी ने अनेक हस्तशिल्पकारों को रोजगार प्रदान किया है। अपने इस सर्वेक्षण में हमें यह भी ज्ञात हुआ कि दारुल उलूम के प्रभाव से इस क्षेत्र में मुस्लिमों में धार्मिक क्रिया कलाओं के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है। मुस्लिम धर्म के अनुयायियों द्वारा नमाज पढ़ने की प्रवृत्ति इसका सर्वप्रथम उदाहरण है। यहाँ अधिकांशतः मुस्लिम जनता इस्लाम के पैगम्बर साहब द्वारा दिये पांच वक्त नमाज अदा करने के निर्देश का पालन कर रही है। इस धार्मिक, सामाजिक प्रवृत्ति से कई आर्थिक परिणाम हुए, जिन्होंने इस क्षेत्र में कई कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया है। जैसे नमाज पढ़ने के लिए उपयोग में लाये जाने वाली चटाई की आवश्यकता से, चटाई की मांग में वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप देवबन्द और इसके आसपास के क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली एक विशेष किस्म की घास से जॉ नमाज (चटाई) बनाने का कुटीर उद्योग अत्यधिक मात्रा में विकसित होता चला गया है। जिसके चलते क्षेत्र में रोजगार का एक नवीन क्षेत्रीय प्रारूप निर्धनतम व्यक्तियों के लिए उत्पन्न हुआ है। देवबन्द दारुल उलूम ने इसके साथ ही इस क्षेत्र में कई नवीन सांस्कृतिक अभिरुचियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित किया है। जिसके कारण यहाँ अपेक्षाकृत सम्पन्न मुस्लिम लोगों में कालीन के उपयोग करने की प्रवृत्ति में भी वृद्धि हुई है। जिससे यहाँ कालीनों का बाजार भी विकसित होता चला गया है। यहाँ हम देवबन्द दारुल के विकास का एक अन्य कुटीर उद्योग के विकास के साथ पाये गये सहसम्बन्ध का भी वर्णन करना चाहेंगे। दारुल उलूम ने अपने यहाँ अध्ययनरत छात्रों के लिए अध्ययन अवधि के दौरान सिर पर टोपी धारण करना महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य घोषित किया है। दारुल उलूम देवबन्द द्वारा दिये गये इस परामर्श के नैतिक प्रभाव के कारण इस क्षेत्र के स्थानीय मुस्लिमों में सिर पर टोपी रखने की परम्परा अधिक लोकप्रिय हो गयी है।

मुस्लिम धार्मिक मान्यताओं में धार्मिक कर्तव्यों (नमाज) के निर्वहन करते समय सिर पर टोपी धारण करना एक मुसलमान के लिए आवश्यक माना जाता है। इन सबसे सम्मिलित प्रभावों के चलते, देवबन्द में छात्रों व अन्य मुस्लिमों जनता द्वारा नियमित रूप से टोपी का उपयोग होने की संस्कृति का विकास हो चुका है। इसके परिणाम स्वरूप देवबन्द के बाजार में ऊन व कपड़े की बनी टोपी की नियमित मांग बनी रहती है। जिसके चलते टोपी का निर्माण, देवबन्द क्षेत्र में, एक कुटीर उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। टोपी निर्माण हेतु, वस्त्र के अतिरिक्त मानवीय दक्षतापरक श्रम की मांग सृजित करके न केवल पुरुषों को भी बल्कि महिलाओं को भी एक रोजगार का अवसर प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त इस्लाम धर्म की धार्मिक परम्परा और मान्यताओं में धार्मिक कर्तव्य का निर्वहन करते समय सुगंध का प्रयोग करना श्रेष्ठ माना गया है। जिसके कारण देवबन्द में इत्र का व्यापार काफी विकसित हो रहा है। यहाँ अनेक दुकानें इत्र का विक्रय कर रही हैं। और सीमित स्तर पर इत्र निर्माण का कार्य भी हो रहा है।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य ने, न केवल राजनीतिक सत्ता को ही प्रभावित किया था। अपितु इसने देश ज्ञान की तुलना में कई पश्चिमी विज्ञान व प्रौद्योगिकी को भी प्रभावित किया था। चिकित्सा हेतु पश्चिम में विकसित हुई ऐलोपैथी का ब्रिटिश काल में पर्याप्त प्रचार-प्रसार हुआ था।

दारुल उलूम देवबन्द ने परम्परागत चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद व यूनानी) के प्रति अपेक्षाकृत अधिक स्वीकृति दर्शायी है। इससे बड़ी संख्या में हकीम व आयुर्वेदिक औषधियों की विक्रय व निर्माण करने वाली दुकानों का बाजार विकसित हुआ है। इसके अतिरिक्त दांतों की एक औषधि तथा दातुन के रूप में प्रयुक्त होने वाली वनस्पति मिश्रण का यहाँ अत्यधिक मात्रा में बाजार में विक्रय होता है। इस प्रकार यहाँ हम यह रेखांकित करना चाहेंगे कि देवबन्द दारुल उलूम ने केवल देवबन्द क्षेत्र की आय में कई रूपों में वृद्धि की है अपितु इसने भारत की राष्ट्रीय आय में भी कई रूपों में वृद्धि की है। जैसे विदेशों से दारुल उलूम देवबन्द में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आने वाले छात्रों द्वारा अपने शिक्षण काल में किया जाने वाला न्यून या अधिक मात्रा में लाये जाने वाले धन के कारण, धन का प्रवाह, उन देशों से भारत में व देवबन्द क्षेत्र में होता ही है। इसके अतिरिक्त दारुल उलूम देवबन्द को विदेशी उदार दानदाताओं एवं विभिन्न दानदाता संस्थाओं से बड़ी मात्रा में अनुदान प्राप्त होता है। वह भी अनेक रूपों में देवबन्द क्षेत्र में ही व्यय होता है। दारुल उलूम देवबन्द के कारण ही यह धन का प्रवाह, अपेक्षाकृत रोजगार का स्तर और परिणाम स्वरूप जीवन स्तर उत्तरी भारत के अन्य उपनगरों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक उच्च है। दारुल उलूम देवबन्द के विद्वानों ने दारुल उलूम देवबन्द की स्थापना से ही विश्वस्तरीय साख को प्राप्त किया है जिसके चलते सम्पूर्ण विश्व से भौक्षिक व धार्मिक पर्यटन हेतु बड़ी संख्या में व्यक्तियों का निरन्तर आवागमन दारुल उलूम देवबन्द में होता रहता है जिसके कारण देवबन्द को एक क्षेत्रीय पर्यटन स्थल के रूप में पहचान मिली है। वह स्थानीय क्षेत्र को समृद्ध व सम्पन्न बनाती है। रोजगार उत्पन्न करती है व अनेक रूपों में इस क्षेत्र को लाभान्वित करता है।

निष्कर्ष

अतः यदि हम देवबन्द व उसके सहवर्ती क्षेत्र पर दारुल उलूम देवबन्द के आर्थिक प्रभाव को समग्र रूप से देखें तो हम पाते हैं कि इस संस्थान ने आर्थिक क्षेत्र में भी एक ही समय में दोहरी भूमिका का निर्वहन किया है। जैसे जहाँ एक ओर इसने मुख्य बाजार व औद्योगिक क्षेत्रों को प्रत्यक्ष रूप से विकसित होने में सहायता प्रदान की है। वहीं इसके अतिरिक्त दारुल उलूम देवबन्द ने हस्त-शिल्प, कुटीर उद्योगों और असंगठित की आर्थिक गतिविधियों को भी अत्यधिक सकारात्मक रूप से प्रोत्साहित किया है।

REFERENCES

1. मुहम्मद सुलेमान, दारुल उलूम देवबन्द का इतिहास, मकतबा दारुल उलूम, देवबन्द 2012, पृष्ठ 110-117
2. सहारनपुर गजेटियर, पृष्ठ 224
3. राम नारायण मिश्रा, उत्तर प्रदेश, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद, 1943, पृष्ठ 30
4. भोधार्षी ने क्षेत्र भ्रमण कर आस-पास के नगरों से तुलना करने पर यह अनुभव किया।
5. भोधार्षी द्वारा मौलाना आकिल, मजलिस-ए-शूरा, मेम्बर दारुल उलूम देवबन्द, से लिए गये साक्षात्कार पर आधारित
6. देवबन्द निवासी मौ0 अब्दुरहमान सब्जी विक्रेता से भोधार्षी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित
7. देवबन्द निवासी श्री सुधीर गुप्ता, भवन निर्माण विक्रेता से भोधार्षी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित
8. भोधार्षी द्वारा डा0 अखलाक, पूर्व कार्यवाहक प्राचार्य, इस्लामिया डिग्री कालेज, देवबन्द, से लिए गये साक्षात्कार पर आधारित
9. मुहम्मद सुलेमान, दारुल उलूम देवबन्द का इतिहास, मकतबा दारुल उलूम, देवबन्द 2012, पृष्ठ 183-184
10. देवबन्द निवासी श्री रहमान, ऑटो रिक्शाचालक से भोधार्षी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित
11. देवबन्द निवासी डा0 विश्वास भान, दिल्ली विश्वविद्यालय से शिक्षाशास्त्र में डायरेक्ट उपाधि से भोधार्षी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित
12. देवबन्द निवासी मौ0 सलीम, टोपी विक्रेता से भोधार्षी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित
13. देवबन्द निवासी डा0 विश्वास भान, दिल्ली विश्वविद्यालय से शिक्षा शास्त्र में डायरेक्ट उपाधि, से भोधार्षी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित